

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४९

नित नवल वृषेश चन्द्र लाल

छओ अध्ययनक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

कविता, कथा आ रूपान्तरण

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४९

नित नवल वृषेश चन्द्र लाल

छओ आलोचनात्मक अध्ययनक पुनर्परीक्षण

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

मूल पुस्तक “नित नवल वृषेश चन्द्र लाल” गजेन्द्र ठाकुर लिखित छह विस्तृत अध्ययनक संकलन अछि। प्रथम दू अध्ययन कवितासंग्रह, तेसर आ चारिम कथासाहित्य तथा पाँचम आ छठम मैथिली रूपान्तरित उपन्यासपर केन्द्रित अछि। एहि रचनाकें पढ़ैत साहित्यक मूल कृति आ ओकर ऊपर पहिलेसँ लिखल समीक्षा दुनूक स्तर अलग राखल गेल अछि।

एहि समीक्षा-अध्ययनक लक्ष्य मूल आलोचकक प्रतिज्ञा, पाठ-साक्ष्य, ऐतिहासिक प्रसंग, रूपान्तरण सम्बन्धी दावाक प्रमाण आ अन्तर्विरोधक परीक्षण अछि। मूल ‘आन्दोलन’, ‘ढोलक’, ‘गोलबा’, ‘माल्हो’, ‘मोदिआइन’ आ ‘सुम्निमा’क स्वतंत्र मूल पुस्तकसभ एहि उपलब्ध संलग्नकमे नहि अछि; तें मूल समीक्षा-संकलनक उद्धृत प्रसंगकें आलोचक द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य रूपें पढ़ल गेल अछि, स्वतंत्र मूल-पुस्तक सत्यापन रूपें नहि।

अध्ययनक मूल अनुक्रम

- 01 — आन्दोलन : कविता, लोकतन्त्र आ प्रतिगमन-विरोध
- 02 — ढोलक : बाल-ताल-नालक काव्य-रचना
- 03 — गोलबा : कथामे पशु-दृष्टि आ मौनक नैतिकता
- 04 — माल्हो : नौ कथा, स्मृति आ सामाजिक सम्बन्ध
- 05 — मोदिआइन : महाभारतक मानवीय पुनर्पाठ
- 06 — सुम्निमा : देह, आत्मा, लोक-बुद्धि आ अनुवाद

01 आन्दोलन : कविता, लोकतन्त्र आ प्रतिगमन-विरोध

“नित नवल वृषेश चन्द्र लाल”क पहिल अध्ययन ‘आन्दोलन’ कविता-संग्रहक नेपालक लोकतान्त्रिक उथल-पुथल आ जनकपुरक सार्वजनिक जीवनक सन्दर्भमे रखैत अछि। आलोचक प्रकाशक सुदामा प्रकाशन, समर्पण-पृष्ठ, तत्कालीन राजनीतिक प्रसंग आ कविताक प्रतिरोधी स्वरकें एक साक्ष्य-शृंखलामे देखबैत छथि। एहन आरम्भ अध्ययनक उपलब्धि अछि: कृतिक बाहरी सामाजिक काल आ भीतरी काव्य-प्रतिज्ञा एक-दोसरासँ अलग नहि राखल गेल अछि।

मुदा संग्रहक अत्यल्प मूल्यसँ सीधा ई निष्कर्ष निकालब जे रचनाक एकमात्र उद्देश्य गैर-व्यावसायिक जन-जागरण छल, तर्कक दृष्टिसँ पर्याप्त नहि। मूल्य वितरणक नीति बताबैत अछि; कविक उद्देश्यक निर्णायक प्रमाण लेखकक लिखित कथन, संस्करणक परिवेश आ वास्तविक बिक्री-पद्धतिसँ मेल कयलापर होयत। तहिना राजनीतिक पक्षधरता कविता होएबाक अपनेमे प्रमाण नहि— पाँतिक ध्वनि, प्रतिमा आ भावगत द्वन्द्व सेहो जाँचब चाही।

आलोचक ‘इतिहासक मुखर सहोदर’क विचारसँ कविता इतिहासक तुलना करैत छथि। इएह स्थानपर इतिहासक दस्तावेज आ साहित्यक भाव-सत्य अलग करब आवश्यक अछि। कविता ऐतिहासिक क्षणकें प्रतीकित करि सकैत अछि, मुदा घटनाक दिनाङ्क, जिम्मेदार व्यक्तिक भूमिका आ संख्यात्मक दावाक सत्यापन स्वतंत्र सामग्री माँगैत अछि। तदनुसार ‘आन्दोलन’क वास्तविक सर्जनात्मक शक्ति ओहि कवितामे खोजल जाय जतय राजनीतिक घोषणा व्यक्तिगत स्मृति, आशंका अथवा दुविधासँ टकराइत अछि।

02 ढोलक : बाल-ताल-नालक काव्य-रचना

‘ढोलक’क अध्ययन पुस्तकक नामक माध्यमसँ कविता-संग्रहक आन्तरिक स्थापत्य बुझबाक प्रयास करैत अछि। आलोचक ‘बाल’, ‘ताल’ आ ‘नाल’ तीन खण्डक विषयगत सम्बन्ध प्रस्तुत करैत छथि—बाल-अनुभव, लोक-ध्वनि आ सार्वजनिक जीवनक शिरा-जाल। एहि प्रस्तावमे रूपक आ संरचना केँ एकहि सूत्रमे देखबाक क्षमता अछि। ढोलक मात्र वाद्य नहि, सामूहिक देहक ताल बनि उठैत अछि।

मुदा अध्यायक भीतर खण्डवार कविताक संख्यामे ‘ताल’ तथा ‘नाल’क विवरण एकसमान नहि भेटैत अछि: कतहुँ २०/१४/२७, कतहुँ २०/१५/२७ सन गणना उपस्थित अछि। एकटा प्रमाणित मूल अनुक्रमक आधारपर संख्या स्थिर करब आलोचनात्मक संस्करणक प्राथमिक आवश्यकता अछि। एहन सम्पादकीय असंगति पुस्तकक विचारक सारकेँ मिटबैत नहि, मुदा शीर्षकवार कविताक गणनाक आधारपर देल निष्कर्षकेँ कमजोर करैत अछि।

बालखण्डक रचनाकेँ केवल शिक्षा-प्रदानक माध्यम नहि मानि बाल-पाठकक स्वतन्त्र हास्य आ भाषिक खेलक कसौटीपर देखब आवश्यक अछि। तालखण्डमे लोकसंगीतक लय आ कागजी छन्दक सम्बन्ध, नालखण्डमे राजनीतिक नाराक विरुद्ध काव्यात्मक बहुवचन—ई तीनू तुलना पुस्तकक तर्कक वास्तविक परीक्षा अछि।

03 गोलबा : कथामे पशु-दृष्टि आ मौनक नैतिकता

‘गोलबा’क अध्ययनमे शीर्षक कथा एकटा खस्सीक दृष्टि आ घरक मानवीय व्यवहारक माध्यमसँ पढल गेल अछि। बड़कीमाइक दुलार, गोलबाक देहक प्रति परिवारक स्वामित्व आ अन्तिम हिंसाक आशंका एक गहीर विडम्बनाक तर्क रचैत अछि। आलोचक कथाक आत्मीय भाषा आ पात्रक नियतिक बीच टकराव पहचानैत छथि; साहित्यिक विश्लेषणक एहि स्थानपर कथाक वस्तुगत विस्तार आलोचनाकें विश्वसनीय बनबैत अछि।

एहि पुस्तकमे ‘डीप डिप्रेसन’ आ ‘चौकपरक मौगी’ कें एकहि समूहक भीतर पढल गेल अछि। पहिलमे वैवाहिक शंका, गन्ध-स्मृति आ चिकित्सकीय संवादक मौन; दोसरमे शहरीकरण आ असहाय स्त्रीक प्रति सार्वजनिक उदासीनता—ई दूटा अलग कथाभूमि अछि। तीनू कथाकें देहपर नियन्त्रण आ मौनक नैतिकता द्वारा जोड़बाक प्रयास उपयोगी अछि, मुदा समान सूत्रक आग्रहमे पात्रक वर्ग, लिङ्ग आ शक्ति-सम्बन्धक वास्तविक भिन्नता बिसराएल नहि जाय।

विशेष रूपसँ ‘चौकपरक मौगी’क हिंसात्मक अन्तक समीक्षा करैत दृश्य-साक्ष्य आ आलोचकक अनुमानक बीच भेद राखब जरूरी अछि। एकटा अनिश्चित संकेतकें अदालतक निर्णायक तथ्य जकाँ लिखब कथा-समीक्षाक सीमा लाँघब होयत। कथाक नैतिक आघातक महत्त्व पाठककें अनिश्चितता सँ सामना कराबऽ मे सेहो होइत अछि।

04 माल्हो : नौ कथा, स्मृति आ सामाजिक सम्बन्ध

‘माल्हो’क मूल आलोचनामे नौ कथाक समग्र पुनर्पाठ अछि। देपुरवाली काकीक प्रतीक्षा, कुमुदिनीक वर्गगत अवस्था, राज्यहिंसा आ परिवारक मौन पीडा जोड़ि आलोचक कथा-संसारकेँ सामाजिक अनुभवक विविध धरातलपर रखैत छथि। समीक्षा कथा-शीर्षकक एकरेखीय अर्थ धरि सीमित नहि रहि व्यक्ति, स्मृति, प्रेम, श्रम आ नैतिक संकटक मध्य सम्बन्ध देखबैत अछि।

तथापि कथा-समूहक एतेक व्यापक समाजशास्त्रीय वर्गीकरणक बीच कथन-तकनीकक प्रश्न उपस्थित अछि: कोन प्रसंगमे कथावाचक पात्रसँ दूरी राखैत अछि, कतय पात्र अपना अनुभवक भाषा पबैत अछि, आ कतय आलोचकक सामाजिक प्रतिज्ञा मूल कथाक अस्पष्टता भरि दैत अछि? एहि सवालक उत्तर बिना सब कथा एकहि विचारधाराक उदाहरण बनबाक जोखिम अछि।

आलोचक जखन ‘माल्हो’ आ आन कथाकेँ नारी-विमर्श वा अधस्तन दृष्टिसँ देखैत छथि, तखन स्त्रीक स्वाधीन निर्णय केवल पीड़ित होएबाक चरित्रणसँ अलग पहिचानल जाय। कतेक स्थानपर स्त्री अपन मौन स्वयं चुनैत छथि आ कतेक स्थानपर मौन थोपल जाइत अछि, ई भेद सामाजिक आलोचनाकेँ अधिक सूक्ष्म बनाओत।

05 मोदिआइन : महाभारतक मानवीय पुनर्पाठ

विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाक 'मोदिआइन'क वृषेश चन्द्र लाल-कृत मैथिली रूपान्तरणपर आधारित पाँचम अध्ययन महाभारतक महायुद्धकें जन-साधारणक स्त्री-अनुभवसँ देखबाक प्रयास करैत अछि। समीक्षा मोदिआइनक वक्तृत्व, विस्थापन आ युद्धक मूल्यक प्रश्न उठबैत अछि। महाकाव्यक विजेता-केन्द्रित आख्यानसँ पीडितक देह आ स्मृतिदिस दृष्टि घुमाएब एहि अध्ययनक सर्जनात्मक उपलब्धि अछि।

आलोचक अर्जुनक करुणा आ गीताक कर्तव्यबोधमे एक तीव्र नैतिक द्वन्द्व देखैत छथि। मुदा एहि साहित्यिक विरोधकें भगवद्गीताक सम्पूर्ण दार्शनिक परम्पराक अन्तिम निषेध कहब ठीक नहि; उपन्यासक पात्रक दृष्टिकोण आ शास्त्रक स्वतंत्र तत्त्वचर्चा अलग विधा अछि। साहित्यिक चरित्रक आरोप वा विद्रोह स्वयं लेखकक पक्ष होयब आवश्यक नहि।

एहि खण्डक अनुवाद-समीक्षामे मुख्य सावधानी अछि जे मैथिली रूपान्तरणक विशिष्ट शब्दचयनक महत्त्व प्रत्यक्ष स्वीकारल जाय, मुदा मूल नेपाली पाठ आ मध्यवर्ती विकल्प बिना 'मूलक आशय अक्षुण्ण' सन निर्णायक प्रमाण-वाक्य नहि लिखल जाय। समीक्षा कें रूपान्तरणक सांस्कृतिक पुनर्स्थापन तथा मूल-लक्ष्य पाठक व्याकरणिक भिन्नता दूनू देखबाक चाही।

06 सुम्निमा : देह, आत्मा, लोक-बुद्धि आ अनुवाद

‘सुम्निमा’क अध्ययन मूल कोइराला उपन्यासक मैथिली रूपान्तरणमे सोमदत्त आ सुम्निमाक बाल्यकालीन संवाद, तपस्या, देह-दमन, पुलोमाक दाम्पत्य-वेदना आ अगिला पीढ़ीक सम्बन्धकें जोड़ैत अछि। आलोचक कथाक वृत्ताकार संरचना, कौशिकी नदीक परिवेश आ देह-आत्माक दार्शनिक संघर्षकें एक ठोस पाठ-विन्यासक रूपमे देखबैत छथि। सुम्निमाकें केवल ‘प्रकृति’क प्रतीक नहि, तर्क करनिहार स्त्री बनाकऽ पढ़ब अध्ययनक विशेष गुण अछि।

सोमदत्तकें एकरेखीय खलनायक बना देबाक विरोध आ पुलोमाक स्वतन्त्र पीड़ाक पहिचान समालोचनाकें मनोवैज्ञानिक गहराइ दैत अछि। मुदा पात्रक व्यवहारकें फ्रायडीय ‘दमन’क प्रत्यक्ष वैज्ञानिक निदान मानब साहित्यक अर्थक क्षेत्रक अतिक्रमण होयत। मनोविश्लेषण एक व्याख्यात्मक औजार अछि; हर प्रसंग ओकर पुष्टि नहि। स्रोत मे उद्धृत आधुनिक समीक्षकक मतक स्वतंत्र ग्रन्थपरीक्षा बिना ओकरा निर्णायक प्राधिकार नहि मानल जाय।

आर्य-किरात विरोधक समीक्षामे सबसँ आवश्यक सीमा जातीय स्वभावक स्थायीकरण अछि। उपन्यासक भाषा जे ‘हावा’ आ ‘माटि’क प्रतीक दैत अछि ओकरा सांस्कृतिक द्वन्द्व रूपमे पढ़, जैविक नियति रूपमे नहि। मैथिली रूपान्तरणक भाषासँ कोइरालाक पात्रकें नया पाठक भेटैत छथि; ई साहित्यिक उपलब्धि अछि, मुदा मूल नेपाली पाठक तुलनात्मक साक्ष्यसँ पृथक् समीक्षा बनबाक चाही।

समग्र मूल्याङ्कन

छाओ अध्ययनक व्यापकता एकर प्रमुख शक्ति अछि: लोकतान्त्रिक कविता, ध्वनि-आधारित काव्यरचना, पशु-दृष्टि, ग्रामीण नारी-अनुभव आ नेपाली मूलक मैथिली रूपान्तरण एकहिटा आलोचनात्मक क्षेत्र बनैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक दृष्टि समानान्तर साहित्यक प्रश्न द्वारा स्थापित होइत अछि, मुदा प्रत्येक कृतिक विशिष्ट भाषा-शिल्पक स्वतन्त्र परीक्षण एहि व्यापक प्रतिज्ञाक संग बराबर जरूरी अछि।

अध्ययनक मुख्य संशोधनीय क्षेत्र तीन अछि। प्रथम, मूल कविताक अथवा कथाक प्रमाणित संस्करण, कवितावार अनुक्रम आ संख्याक स्थिरता। दोसर, साहित्यिक उपमा आ ऐतिहासिक तथ्यक भेद; पुस्तक-मूल्य, राजनीतिक घटना वा पुरस्कारक उल्लेखक अलग प्रमाण। तेसर, मैथिली रूपान्तरणक आलोचनामे मूल नेपाली पाठ आ लक्ष्यपाठक समकक्ष प्रसंगक वास्तविक तुलना।

एहि सावधानीक बादो संकलन साहित्यक सामाजिक न्याय, भाषा आ संस्कृतिक संग सम्बन्धपर गंभीर बहस उपस्थित करैत अछि। आलोचनाक मूल्य एकमत होएबमे नहि, पाठक सामने प्रमाणित असहमतिक संभावना खोलबामे अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। नित नवल वृषेश चन्द्र लाल। संलग्न मूल Microsoft Word संस्करण; प्रकाशन-विवरण आ सम्पूर्ण समीक्षात्मक पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४९

वृषेश चन्द्र लालक छओ मूल अध्ययनः
आन्दोलन, ढोलक, गोलबा आ माल्हो;
मोदिआइन आ सुम्निमाक रूपान्तरण।
साहित्यिक प्रमाण, वैचारिक बहस आ
मूल समीक्षा-पद्धतिक पुनर्परीक्षण।

विदेहक मूल साहित्यिक अभिलेख



www.videha.co.in



GitHub Videha Archive

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

छओ बाड़ नौ इञ्च — विदेह